संक्षिप्त परिचय और रचनाएं

प्रकाश मनु

हिंदी के प्रसिद्ध कवि, कथाकार और आलोचक प्रकाश मनु ने साहित्य जगत में अपनी एक अलग और विशिष्ट पहचान बनाई है। उन्होंने आसान रास्तों को छोड़कर कठिन और चुनौती भरे रास्तों पर चलना मंजूर किया, इसलिए कि उनके अनुसार बगैर खतरों से खेले कोई रचना नहीं बनती। प्रकाश नवु के लिखे उफन्यासों यह जो दिल्ली है, कथा सर्कस और पापा के जाने के बाद ने साहित्य, पत्रकारिता और मीडिया जगत की अंदरूनी तसवीरें पेश कीं। उनकी कविताओं और कहानियों में आज के आदमी की भीतरी-बाहरी लड़ाइयां, टूटन और तकलीफें हैंतो साथ ही एक नई बनती दुनिया का नक्शा भी। इसी तरह आलोचना और साहित्य के इतिहास के क्षेत्र में उनका काम लीक से हटकर और चुनौती भरा है। साहित्य जगत कीमहान शख्सियतों से लिए गए उनके लंबे, अनौपचारिक और बेहद अंतरंग इंटरव्यूज की भी खूब चर्चा रही है।

जन्म : 12 मई, 1950 को शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश में।

शिक्षा : शुरू से विज्ञान के विद्यार्थी। आगरा कॉलेज, आगरा से भौतिक विज्ञान में एम.एस-सी. (1973)। फिर 1975 में हिंदी साहित्य में एम.ए.। 1980 में यू.जी.सी. के फैलोशिप के तहत शोध संपन्न। शोध का विषय—'छायावाद एवं परवर्ती काव्य में सौंदर्यानुभूति।' कुछ वर्ष प्राध्यापक रहे। लगभग दो दशकों से पत्रकारिता में सक्रिय।

उपन्यास : यह जो दिल्ली है, कथा सर्कस, पापा के जाने के बाद।

कहानियां : जिंदगीनामा एक जीनियस का, अरुंधती उदास है, तुम कहां हो नवीन भाई, सुकरात मेरे शहर में, अंकल को विश नहीं करोगे, दिलावर खड़ा है।

कविता : एक और प्रार्थना, छूटता हुआ घर, कविता और कविता के बीच।

संस्मरण/साक्षात्कार : मुलाकात (ग्यारह प्रतिष्ठित रचनाकारों के इंटरव्यू), रामविलास शर्मा : अंतरंग स्मृतियां और मुलाकातें, देवेंद्र सत्यार्थी : एक भव्य लोकयात्री, कथापुरुष शैलेश

मटियानी, नब्बे बरस का सफर, रामदरश मिश्र : एक अंतर्यात्रा, एक दुर्जेय मेधा: विष्णु खरे।

आलोचना/इतिहास : हिंदी बाल कविता का इतिहास, बीसवीं शताब्दी के अंत में उपन्यास।

बाल साहित्य : नानी-नानी कहो कहानी, कहानियाँ नानी की, दादी-दादी कहो कहानी, दादी माँ की मीठी-मीठी कहानियाँ, मैं जीत गया पापा, मेले में ठिनठिनलाल, भुलक्कड़ पापा, लो चला पेड़ आकाश में, चिन-चिन चूं, इक्यावन बाल कहानियां, नंदू भैया की पतंगें, कहो कहानी पापा (कहानियां), गोलू भागा घर से, एक था ठुनठुनिया, चीनू का चिड़ियाघर, नन्ही गोगो के कारनामे, खुक्कन दादा का बचपन (उपन्यास), बच्चों की एक सौ एक कविताएं, हाथी का जूता, इक्यावन बाल कविताएं, हिंदी के नए बालगीत (कविताएं), मुनमुन का छुट्टी-क्लब (नाटक), अजब-अनोखी विज्ञान कथाएँ (विज्ञान फंतासी)।

संपादित : देवेंद्र सत्यार्थी : तीन पीढ़ियों का सफर, देवेंद्र सत्यार्थी : प्रतिनिधि रचनाएं, देवेंद्र सत्यार्थी की चुनी हुई कहानियां, सुजन सखा हरिपाल, सदी के आखिरी दौर में।

पुरस्कार : हिंदी अकादमी के 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित। कविता-संग्रह 'छूटता हुआ घर' पर प्रथम गिरिजाकुमार माथुर स्मृति पुरस्कार।

संप्रति : एचटी मीडिया की बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादकीय विभाग से संबद्ध।

परिवार : पत्नी और दो बेटियां। पत्नी डॉ. सुनीता द्रोणाचार्य कॉलेज, गुड़गांव और अमृतसर के डीएवी कालेज फॉर वीमेन में लेक्चरर रहीं। अब स्वतंत्र रूप से लिखती-पढ़ती हैं। बाल साहित्य और जीवनी लेखन में उनकी कई पुस्तकें सामने आ चुकी हैं। बड़ी बेटी ऋचा मनु ने पर्यावरण और इकोलॉजी में एम.ए. किया है और पर्यावरण को लेकर उनके लेख और किताबें भी छपी हैं। छोटी बेटी अपर्णा मनु ने एनिमेशन और वेब डिजाइनिंग में विशिष्ट योग्यता हासिल की है।

पता : 545, सेक्टर-29, फरीदाबाद- 121008 (हरियाणा)

महत्वपूर्ण रचनाएँ

उपन्यास

यह जो दिल्ली है (पहला संस्क. 1993, मानक पब्लिकेशंस, दिल्ली ; दूसरा संस्करण- 2006, लोकप्रिय प्रकाशन, दिल्ली)
प्रकाश मनु के इस पहले और बेहद चर्चित उपन्यास में एक पत्रकार के जीवन संघर्ष की कथा है। उपन्यास का कथानायक सत्यकाम के बड़ा आदर्श लेखक पत्रकारिता की दुनिया में आता है। पर यहां जो हालात देखता है उससे उसे चोट पहुंची है। पग-पग पर उसे मर्मांतक कष्ट और कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती है। एक ईमानदार पत्रकार की यह यातना कथा पाठकों को पत्रकारिता की दुनिया की आंतरिक सच्चाइयों से परिचित कराती है।

कथा सर्कस (1995, मानक पब्लिकेशंस प्रा.लि. दिल्ली)
प्रकाश मनु का यह दूसरा उपन्यास मीडिया और साहित्य जगत के भीतरी हालात का तीखा व्यंग्यपूर्ण ब्यौरा उपस्थित करता है। कथानायक सुधाकर सूर्यवंशी के बाहरी संघर्षों और अवचेतन की कठिनतर लड़ाइयों से गुजरता यह उपन्यास आज की साहित्यिक दुनिया के झलप्रंपच और आत्म-प्रवंचनाओं से परिचित कराता है। और उन दारुण कष्टों का एहसास कराता है जिनसे गुजरकर एक ईमानदार लेखक को जनता के दु:ख दर्द से जुड़कर लिखना और सच्चाई का पक्ष लेना है। कभी मुक्तिबोध ने कहा था कि पार्टनर तय करो कि किस ओर हो तुम। कथा सर्कस इसी सच्चाई का जवाब देने की एक तकलीफदेह लेकिन ईमाननदार कोशिश है।

पापा के जाने के बाद (1998, किताबघर, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2007, प्र. वही)
प्रकाश मनु का तीसरा उपन्यास है जो चित्रकला की दुनिया के अंत:संघर्ष से गुजरता है। उपन्यास के नायक एक वरिष्ठ चित्रकार वसंत देव हैं। जो जितने बड़े चित्रकार हैं उतने ही अपने आप में लीन रहने वाले खुद्दार व्यक्ति भी। जो किसी भी समझौते से इनकार करते हैं। बेतरह टूटने के बाद बसंत देव गुजरे। तो उनकी बेटी नंदिन ले उनकी यह पूरी मर्मकथा टुकड़ा-टुकड़ा बातचीत में एक लेखक को बताई। वही कथा जिसमें नंदिनी और कथावाचक की बातचीत के साथ-साथ वसंतदेव की डायरी के अंश भी है, खुद-ब-खुद एक मर्मस्पर्शी उपन्यास की शक्ल लेता है।

कहानियां –

मेरी इकतीस कहानियां (2008, नमन प्रकाशन, दिल्ली)– प्रकाश मनु की कहानियों का बृहद संग्रह, जिसमें उनकी प्राय: हर दौर की चुनी हुई, चर्चित और महत्वपूर्ण कहानियां एक साथ आ गई हैं। गंगा चौकीदारनी की कथा शायद पहली बार इसी संग्रह में आई है।

जिंदगीनामा एक जीनियस का (2008, रचनाकार प्रकाशन दिल्ली)– प्रकाश मनु की चुनी हुईं नौ कहानियाँ। अंत में उनका आत्मकथ्य मेरी लेखनी का सफर (एक कहानी यह भी) भी शामिल हैं।

अरुंधती उदास है– खासकर स्त्री की पीड़ा और समकालीन विडंबनाओं से जुड़ी कहानियां इस संग्रह में एक साथ आ गई हैं।

तुम कहां हो नवीन भाई (2003, विद्या विहार, दिल्ली)– प्रकाश मनु की लंबी कहानियों का संग्रह।

सुकरात मेरे शहर में (2002, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली)– यथार्थ की तीखी धार और विसंगतियों से जुड़ी कहानियां।

अंकल को विश नहीं करोगे (1994, मानक पब्लिकेशंस प्रा.लि. दिल्ली)– प्रकाश मनु की कहानियों का पहला संग्रह, जिसमें अनकी शुरुआती कहानियों से लेकर अत्यंत चर्चित कहानियां तक एक साथ पढ़ने को मिल जाती हैं।

दिलावर खड़ा है– तीन मित्रों देवेंद्रकुमार, विजयकिशोर मानव और प्रकाश मनु की पांच–पांच कहानियों का संग्रह।

कविता

एक और प्रार्थना (1999, नमन प्रकाशन नई दिल्ली)
छूटता हुआ घर (1992, मगध प्रकाशन दिल्ली)
कविता और कविता के बीच (1989, धारा प्रकाशन, दिल्ली) देवेंद्रकुमार साथ सम्मिलित संग्रह

संस्मरण/साक्षात्कार

मुलाकात (ग्यारह प्रतिष्ठित रचनाकारों के इंटरव्यू, 1998, अभिरुचि प्रकाशन दिल्ली)

इसमें ग्यारह प्रतिष्ठित रचनाकारों के इंटरव्यू हैं, जिनमें देवेंद्र सत्यार्थी, रामविलास शर्मा, त्रिलोचन, रामदरश मिश्र, नामवर सिंह, शैलेश मटियानी, कमलेश्वर, लोठार लुत्से, जगदीश चतुर्वेदी, हरिपाल त्यागी, विष्णु खरे। ये लंबे इंटरव्यू बेहद अनौपचारिक तथा लगभग बतकही की शक्ल में हैं।

रामविलास शर्मा : अंतरंग स्मृतियां और मुलाकातें (2004, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली)- शीर्ष आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा से जुड़ी यादें, लेख और इंटरव्यू।
देवेंद्र सत्यार्थी : एक भव्य लोकयात्री (2004, प्रतिभा प्रतिष्ठान, दिल्ली)- सत्यार्थी जी से जुड़ी यादें, उनकी शख्सियत और रचनाओं पर लेख।
कथापुरुष शैलेश मटियानी (2004, ग्रंथ सदन, शाहदरा) -शैलेश मटियानी से जुड़ी यादें, उनकी शख्सियत और रचनाओं पर लेख।
नब्बे बरस का सफर (लोकयात्री देवेंद्र सत्यार्थी से लंबी बातचीत, जो सापेक्ष पत्रिका के विशेषांक के रूप में छपी थी।
रामदरश मिश्र : एक अंतर्यात्रा (2004, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)- डा. रामदरश मिश्र की शख्सियत और उनकी साहित्य साधना को समझने की एक विनम्र कोशिश।
एक दुर्जेय मेधा: विष्णु खरे- वष्णु खरे से जुड़ी यादें, उनकी शख्सियत और रचनाओं पर लेख।

आलोचना/इतिहास

हिंदी बाल कविता का इतिहास (2003, मेधा बुक्स, दिल्ली)
बीसवीं शताब्दी के अंत में उपन्यास (2003, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली)

संपादित

देवेंद्र सत्यार्थी : तीन पीढ़ियों का सफर (1992, मानक पब्लिकेशंस दिल्ली)
देवेंद्र सत्यार्थी : प्रतिनिधि रचनाएँ-दो खंड (2002, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
देवेंद्र सत्यार्थी की चुनी हुई कहानियां (1996, यात्री प्रकाशन, दिल्ली)

सुजन सखा हरिपाल (1998, अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली)- वरिष्ठ चित्रकार हरिपाल त्यागी के व्यक्तित्व और कला कर्म की जानकारी देने वाली पुस्तक जिसमें त्यागी जी के अंतरंग

मित्रो,चित्रकारों औरसमीक्षकों के लेख तथा संस्मरण शामिल हैं।

शिखर आलोचक रामविलास शर्मा- रामविलास शर्मा की शख्सियत और रचनाओं पर उनस अंतरंग रूप से जुड़े लेखकों और आलोचकों के लेख, संस्मरण और टिप्पणियां।

सदी के आखिरी दौर में (1998, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली)- इस संग्रह में अनेक सशक्त कवियों की कविताएँ पहली बार सामने आईं। इनमें ब्रजेश कृष्ण, महावीर सरवर, श्याम सुशील, संजीव ठाकुर, रमेश तैलंग, शैलेंद्र चौहान, विजय किशोर मानव, हरिपाल त्यागी, सत्यप्रकाश बेकरार शामिल हैं। इसके अलावा देवेंद्रकुमार और प्रकाश मनु की कविताएँ भी हैं।

यादों के काफिले (इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली)- इस पुस्तक में सत्यार्थी जी के अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों, महान राजनेताओं तथा कला, संगीत और संस्कृति के क्षेत्र की महत्वपूर्ण शख्सियतों के बारे में संस्मरण पहली बार एक पुस्तक के रूप में संगृहीत होकर सामने आए।
देवेंद्र सत्यार्थी : नब्बे बरस का सफर (1997, सापेक्ष पत्रिका का विशेषांक, दुर्ग, मध्यप्रदेश)
मेरे साक्षात्कार (2004, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली)-सत्यार्थी जी के इंटरव्यूज की पहली और एकमात्र पुस्तक।

प्रकाश मनु का बाल साहित्य

बाल कहानियाँ

नानी-नानी कहो कहानी (2009, ट्रांसवर्ल्ड पब्लिर्श, नई दिल्ली) -26 छोटी-छोटी रोचक कहानियाँ।
कहानियाँ नानी की (2009, बैनियन ट्री पब्लिशर्स, दिल्ली) -26 छोटी-छोटी रोचक कहानियाँ
दादी-दादी कहो कहानी (2009 ओरिएण्ट क्राफ्ट पब्लिसर्श एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली,)- 26 छोटी-छोटी रोचक कहानियाँ
दादी माँ की मीठी-मीठी कहानियाँ (2008, अग्नि प्रकाशन, नई दिल्ली)- 23 छोटी-छोटी रोचक कहानियाँ

मैं जीत गया पापा (2008, न्यू कॉन्सपैटस पब्लिशर्स, दिल्ली)- आठ रोचक कहानियाँ जिनमें आज के जीवन यथार्थ की छवियाँ हैं।
मेले में ठिनठिनलाल (2008, सुयश प्रकाशन, दिल्ली)- संग्रह में अलग-अलग रंग और शेड्स की दस बाल कहानियाँ शामिल हैं।
भुलक्कड़ पापा- प्रकाश मनु की कुछ चुनी हई मजेदार कहानियां।

लो चला पेड़ आकाश में (2005, सरला प्रकाशन दिल्ली)- चुनी हुईं आठ रोचक कहानियाँ, जिनमें मुनमुनलाल ने बनाई घड़ी और चंदू की छींक जैसी चर्चित कहानियाँ भी हैं।
चिन-चिन चूं- प्रकाश मनु की 22 बाल कहानियां, जिनमें बहुत नयापन और ताजगी है।
इक्यावन बाल कहानियाँ (2006, आत्माराम एंड संस, दिल्ली) प्रकाश मनु की प्रतिनिधि कहानियों का बड़ा संग्रह जिसमें अलग-अलग रंग की इक्यावन मजेदार बाल कहानियाँ शामिल हैं।
नंदू भैया की पतंगें (2002, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली)- प्रकाश मनु की तेरह बाल कहानियों का संग्रह जिनमें जमना दादी, रंग-बिरंगे खरगोश, रहमान चाचा, झटपट सिंह और नंदू भैया की पतंगें सरीखी कहानियाँ शामिल हैं।
कहो कहानी पापा (1989, भारती ब्रदर्स, दिल्ली) -प्रकाश मनु की बाल कहानियों का पहला संग्रह जिसमें उनकी तो ले आओ अक्ल, चींटी ने कहा, कविता फिर ऐसे बनी, और जन्मदिन का उपहार सरीखी रोचक कहानियाँ शामिल हैं।
नटखट नंदू की कहानियाँ (2006, एम्परसेंड पब्लिकेशन, नई दिल्ली)- 28 छोटी-छोटी लेकिन नटखटपन से भरी कहानियाँ जिनमें बच्चों की कल्पना और क्रीड़ाओं के अलग-अलग रंग हैं।

बाल उपन्यास

गोलू भागा घर से (2005) - प्रकाश मनु के इस पहले बाल उपन्यास में घर से भागने की कहानी है। गणित में नंबर कम आने पर घर पर पापा ने डाँटा तो एक दिन गोलू से घर से भाग खड़ा हुआ। उसने सोचा था कि वह कुछ बनकर घर लौटेगा पर घर से भागकर उसे जिन टेढे-मेढे रास्तों पर गुजरना पड़ा उससे वह अंदर ही अंदर थरथरा गया और यहाँ तक कि वह एक अपराधी गिरोह के हाथ पड़ गया। अंत में पुलिस कप्तान रहमान चाचा की मदद से वह उस गिरोह का भंडाफोड करता है और जब घर लौटता है तो उसकी दिलेरी के कारण पुरे मक्खनपुर में उसका स्वागत होता है।

एक था ठुनठुनिया ( )
प्रकाश मनु के इस दूसरे बाल उपन्यास में हास्य-विनोद के रंग गहरे हैं। ठुनठुनिया गाँव का सीधा-सादा लेकिन हरफनमौला लड़का है। ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं पर वह बुद्धि का तेज है। और नई-नई बातें सीखने में उसे ज्यादा मजा आता है। पढ़ाई से ज्यादा उसे घुमक्कड़ी खेलकूद और दूसरी चीजों में आनंदआता है। खिलौने बनाने का चाव चढ़ा तो वह रघु चाचा के पास जाकर खिलौने बनाना सीखने लगा। ऐसे ही कठपुतलियाँ बनाने के खेल ने उसे जगह-जगह भटकाया। पर अंत में माँ की याद आई और पढ़ने लिखने की तरफ ध्यान गया। तो फिर वह सचमुच कुछ बनकर दिखाता है। उपन्यास का अंत सुखद और बड़ा मजेदार है।

चीनू का चिड़ियाघर (2006, रेमाधव पब्लिकेशन प्रा.लि. नोएडा)
इस छोटे से उपन्यास में एक छोटी बच्ची चीनू का किसा है जिसे घूमना पसंद है। घर में कोई और साथ न दे तो वह अकेली ही घूमने निकल पड़ती। हर बार जब वह घूमने जाती है उसे कोई न कोई नया दोस्त मिल जाता है और उसके दोस्त हैं कौन? भालू, हाथी, यहाँ तक कि बाघ तक। सभी चीनू से प्यार करते हैं और चीनू की भोली-भाली बातें सभी को अच्छी लगती है। इसीलिए तो हाथी उसे अपनी पीठ पर बिठाकर सारे जगल की सैर करा लाता है। उपन्यास के अंत में चीनू के चिड़ियाघर का रूप बड़ा प्यारा है।

नन्ही गोगो के कारनामे (2007, रेमाधव पब्लिकेशन प्रा.लि. नोएडा)-
प्रकाश मनु का यह चौथा बाल उपन्यास है। इसकी नायिका एक नन्ही बच्ची गोगो है। जो अपनी कल्पना की दुनिया में लीन रहती है। वह खिलौनों से खेलती है। गुड्डे-गुडियों से खेलती है और बातें करती है तो उसे बहुत अच्छा लगता है। अपने खिलौनों को वह अपने साथ खिलाती-पिलाती है और हर वक्त साथ रहती है। उसके इसी भोलेपन के कारण कभी-कभी अजब-गजब बातें होती हैं। जैसे ऐसे पशु-पक्षी भी मिलने चले आते हैं जिनके बारे में लोग समझते हैं कि अब ये विलुप्त प्राणी धरती पर हैं ही नहीं। उपन्यास के अंत में नन्ही गोगो की फंतासी के बड़े अजब-गजब रंग हैं, जिसमें एक जादूगर उसे सारी दुनिया की सैर करा लाता है। और जिस अनोखी कार में वह यात्रा करती है, वह धरती पर ही नहीं, पानी और अंतरिक्ष में भी चलती है। इस बाल उपन्यास में पाठकों को कल्पना के नए-नए रंग और अनूठी छवियाँ नजर आएँगीं।

खुक्कन दादा का बचपन (2008, अग्रगामी प्रकाशन, दिल्ली)
उपन्यास में एक बड़े मजेदार खुक्कन दादा है। मोहल्ले के बच्चे उन्हें हमेशा घेरे रहते हैं और कहानी सुनाने के लिए फरमाइश करते हैं। खुक्कन दादा उन्हें अपने बचपन की सच्ची कहानियाँ सुनाते हैं जिसमें खुक्कन दादा की अपनी शरारतों के रंग है। बच्चे उन्हें सुनकर खूब हँसते और मजा लेते हैं। इन्हें सुनकर बच्चों को खुद अपनी और आसपास की बड़ी मजेदार कहानियाँ याद आ जाती हैं। यों खुक्कन दादा के बचपन के साथ-साथ बच्चों की नटखट शरारतें मिलकर एक बिल्कुल ढंग के इस नायाब उपन्यास की रचना हुई है।

बाल कविताएं

बच्चों की एक सौ एक कविताएं (2006, चेतना प्रकाशन, नई दिल्ली)
हाथी का जूता- प्रकाश मनु की चुनी गुई कहानियों का संग्रह, जिसमें अनकी प्राय: सभी चर्चित और महत्वपूर्ण कहानियां एक साथ आ गई हैं।
इक्यावन बाल कविताएं -प्रकाश मनु की चुनिंदा बाल कविताओं का महत्वपूर्ण और प्रतिनिधि संग्रह।
हिंदी के नए बालगीत (1994, मानक पब्लिकेशंस प्रा. लि. दिल्ली)- रमेश तैलंग, देवेंद्र कुमार और प्रकाश मनु की बाल कविताओं का सम्मिलित संग्रह।

बाल नाटक

मुनमुन का छुट्टी-क्लब- प्रकाश मनु के बाल नाटक जिनमें बच्चों की क्रिएटिव ऊर्जा को रचना की नई-नई राहें नजर आती हैं। इन नाटकों में हास्य का चुटीलापन खास तौर से लुभाता है।

विज्ञान फंतासी
अजब-अनोखी विज्ञान कथाएँ (2007,ओरिएण्ट क्राफ्ट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली)- कौतूहल उत्पन्न करने वाली विज्ञान-फंतासी से जुड़ी छह ऐसी कहानियाँ जिनमें धरती से लेकर अंतरिक्ष तक की दुनिया के रहस्यों को खोजन की जिज्ञासा है।